पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित:16.03.2021 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9971467978 पर Paytm कर दें। – अनिल आर्य

वर्ष-37 अंक-20 चैत्र-2077 दयानन्दाब्द 198 16 मार्च से 31 मार्च 2021 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.03.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 187वां वेबिनार सम्पन्न

शिवरात्रि महर्षि दयानंद की बोध रात्रि बन गई

महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लें –आर्य रविदेव गुप्ता

महर्षि दयानंद ने सोचने की दिशा व दशा ही बदल डाली –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

गुरुवार,11 मार्च 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन ऑनलाइन जूम पर किया गया । उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानंद जी को 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन बोध प्राप्त हुआ था और वह मूलशंकर से दयानंद बन गए , बाद में सत्य के प्रचार प्रसार के लिए आर्य समाज की स्थापना की । यह परिषद का कॅरोना काल मे 186 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि वेदों की शिक्षाओं को अपनाने पर महर्षि दयानंद ने बहुत अधिक जोर दिया । उन्होंने पाखंड अंधविश्वासों पर गहरी चोट की जिससे समाज मे जागरूकता बढ़ी । उनका कहना था कि वेद ईश्वर कृत ज्ञान है और संसार के हर ज्ञान का सार इसमें निहित है। आज ऋषि बोध दिवस के दिन उनके प्रति हमारी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम सब अपने अपने स्तर पर उनके द्वारा दिखाए रास्ते पर चलने का प्रयास करें और आर्य समाज की नींव को मजबूत करने के लिए योगदान दें। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद वैचारिक क्रांति के अग्रदूत थे,उन्होंने अपने गहन चिंतन व विचारों से लोगों की सोचने की दिशा व दशा बदल डाली । उनके आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं ।उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके हम सभी का कल्याण किया। इसी आत्मबोध और आत्मज्ञान को इस महान विभूति ने हिन्दू जाति के उत्थान का आधार बनाया।उनके विचारों और संदेशों को प्रचारित करने के लिए हमे पुरजोर प्रयास करना चाहिए। मुख्य अतिथि पूर्व मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट व उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान ओम सपरा ने कहा कि ऋषि बोध उत्सव पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि ऋषि के संदेशों को प्रचारित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार करने हेतु आर्य विद्यालयों को प्रारम्भ करें। कार्यक्रम अध्यक्ष आंतरिक लोकपाल पी एन बी महेन्द्र प्रताप नागपाल ने कहा कि प्रत्येक वर्ष ऋषि बोध उत्सव पर हमें आत्म चिंतन करने का प्रयास करना चाहिए। हमने क्या पाया क्या खोया इसका विचार करें और आर्ष ग्रन्थो का स्वाध्याय करें। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि महर्षि ऋषि दयानन्द सरस्वती के ऋण को चुकाने के लिए आर्य(श्रेष्ठ) राष्ट्र का निर्माण करने का प्रयास सभी आर्यों को करना चाहिए। गायिका दीप्ति सपरा,नरेन्द्र आर्य सुमन,कुसुम भण्डारी,मृदुला अग्रवाल, संध्या पांडेय,ईश्वर देवी आर्या(अलवर),प्रतिभा कटारिया, शांता तनेजा,सुशांता आर्या,द्रोपदी तनेजा,प्रतिभा सपरा,राजश्री यादव,उर्मिला आर्या(गुरुग्राम),रविन्द्र गुप्ता, आदि ने गीतों के माध्यम से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर रामकुमार सिंह आर्य,देवेन्द्र भगत,सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य,आर पी सूरी, डी पी परमार,आनन्द प्रकाश आर्य, कमलेश हसीजा,वेदप्रभा बरेजा, ललित बजाज,डॉ रचना चावला, विजय हंस,राजेश मेंहदीरत्ता आदि उपस्थित थे।

वैदिक संध्या पर गोष्ठी व रामनाथ सहगल को दी श्रद्धांजलि

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के लिए संध्या पहली सीढ़ी –आचार्य विजयभूषण आर्य

आर्य समाज के लिए समर्पित रहा रामनाथ सहगल का जीवन –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार,13 मार्च 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में वैदिक संध्या व आर्य नेता रामनाथ सहगल के 98 वे जन्मदिन पर आर्य गोष्ठी का आयोजन ऑनलाइन जूम पर किया गया। यह परिषद का कॅरोना काल में 187 वां वेबिनार था। उल्लेखनीय है कि रामनाथ सहगल का जन्म 13 मार्च 1923 को सरगोधा,पंजाब(अब पाकिस्तान) में हुआ था । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आर्य नेता रामनाथ सहगल का जीवन आर्य समाज के प्रति सदैव समर्पित रहा, आपने युवाओं को आर्य समाज और महर्षि दयानंद की विचारधारा से जोड़ने के लिए सराहनीय कार्य किया । उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती की जन्मभूमि टंकारा को सवारने व विश्व प्रसिद्ध करने का श्रेय सहगल जी को ही जाता है । अजमेर में 1983 में आयोजित महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी समारोह के संयोजक का कार्य कुशलता से निभाया । आप डी ए वी मैनेजिंग कमैटी की उपप्रधान व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के भी वर्षो सचिव रहे । ऐसे हनुमान कार्यकर्ता को आर्य समाज की ओर से उनकी सेवाओं को स्मरण करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । आज की युवा शक्ति के लिए सहगल जी का जीवन प्रेरणा देने का कार्य करता रहेगा। वैदिक विद्वान आचार्य विजय भूषण आर्य ने ष्वैदिक संध्याष क्यों और कैसे विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैदिक संध्या परमात्मा के निकट जाने का पहला साधन है । मनुष्य के शरीर में इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित और अहंकार स्थित हैं। वैदिक संध्या में आचमन मंत्र से शरीर, इन्द्रिय स्पर्श और मार्जन मंत्र से इन्द्रियाँ, प्राणायाम मंत्र से मन, अघमर्षण मंत्र से बुद्धि, मनसा–परिक्रमा मंत्र से चित और उपस्थान मंत्र से अहंकार

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पं. लेखराम जी के 124 वे बलिदान दिवस 6 मार्च पर विशेष

पं. लेखराम की ऋषि दयानन्द से भेंट का देश व समाज पर प्रभाव

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

पंडित लेखराम जी स्वामी दयानन्द जी के प्रारम्भ के प्रमुख शिष्यों में से एक रहे जो वैदिक धर्म की रक्षा और प्रचार के अपने कार्यों के कारण इतिहास में अमर हैं। उन्होंने 17 मई, सन् 1881 को अजमेर में ऋषि दयानन्द से भेंट की थी और उनसे अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया था। ऋषि दयानन्द से अपनी भेंट का वृतान्त उन्होंने अपने शब्दों में ही वर्णन किया है। उनके अनुसार 11 मई सन् 1881 को 'संवाददाता' (पं. लेखराम) पेशावर से स्वामीजी के दर्शनों के निमित्त चलकर 16 की रात को अजमेर पहुंचा और स्टेशन के समीप वाली सराय में डेरा किया और 17 मई को प्रातःकाल सेठ जी के बागीचे में जाकर स्वामी जी का दर्शन प्राप्त किया। उनके (स्वामी दयानन्द जी के) दर्शन से मार्ग के समस्त कष्टों को भूल गया और उनके सत्योपदेशों से समस्त गुत्थियां सुलझ गईं। जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने मुझ (पं. लेखराम जी) से प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्म भी, दो व्यापक (सत्तायें) किस प्रकार इकट्ठे (आत्मा की भीतर परमात्मा) रह सकते हैं? मुझसे इसका कुछ उत्तर न बन पाया। मैंने यही प्रश्न स्वामीजी से पूछा। उन्होंने एक पत्थर उठाकर कहा कि इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर कहा कि मिट्टी? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर पूछा कि जल? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर पूछा कि आकाश और वायु? मैंने कहा कि व्यापक हैं। फिर पूछा कि परमात्मा? मैंने कहा कि वह भी व्यापक है। (स्वामी जी न मुझसे) कहा कि देखो, कितनी चीजें हैं परन्तु सभी उसमें (पथर में) व्यापक हैं। वास्तव में बात यही है कि जो (सत्ता) जिससे सूक्ष्म होती है वह उसमें (दूसरे किंचित स्थूल पदार्थ में) व्यापक हो सकती है। ब्रह्म चूंकि सबसे व अति सूक्ष्म है इसलिए वह सर्वव्यापक है। जिससे मेरी शान्ति हो गई।

मुझसे उन्होंने कहा कि और जो तुम्हारे मन में सन्देह हों सब निवारण कर लो। मैंने बहुत सोच–विचार कर 10 प्रश्न लिखे जिनमें से तीन मुझे स्मरण हैं, शेष भूल गये।

प्रश्न–जीव–ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमाण बतलाइए? उत्तर–यजुर्वेद का 40 वां अध्याय सारा जीव–ब्रह्म का भेद बतलाता है। प्रश्न–अन्य मत के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए या नहीं। उत्तर–अवश्य शुद्ध करना चाहिए। प्रश्न–विद्युत क्या वस्तु है और किस प्रकार उत्पन्न होती है? विद्युत सर्वत्र है और रंगड़ से उत्पन्न होती है। बादलों की विद्युत् बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है। मुझसे कहा कि 25 वर्ष से पूर्व विवाह न करना। कई ईसाई और जैनी (स्वामी दयानन्द से) प्रश्न करने आते थे, परन्तु शीघ्र निरुत्तर हो जाते थे।

एक हिन्दू नवयुवक–जिसके विचार पूर्णतया ईसाई मत की ओर झुके हुए थे––प्रतिदिन प्रश्न करने आता और शान्त होकर जाता था। अन्त में वह पूरी शान्ति पाने के पश्चात् ईसाई मत से विरक्त होकर वैदिक धर्मानुयायी हो गया। व्याख्यानों में सैकड़ों मनुष्य आते और लाभ उठाते जाते थे। 24 मई सन् 1881 को दोपहर के समय महाराज जी से विदा होने पर मैंने निवेदन किया कि आप मुझे अपना कोई चिन्ह प्रदान करें। (स्वामी जी ने मुझे) चिन्ह–स्वरुप अष्टाध्यायी की एक प्रति प्रदान की जो अभी तक पेशावर समाज में विद्यमान है। तत्पश्चात् उनके चरणों को हाथ लगाकर नमस्ते करके दास (पं. लेखराम) वहां से विदा होकर चला आया।

पंडित लेखराम जी ने पहली बात यह बताई है कि उन्हें पेशावर से अजमेर पहुंचने में पांच दिन का समय लगा। इस यात्रा से उन्हें थकान हुई परन्तु वह 17 मई, 1881 को स्वामी दयानन्द जी के दर्शन से दूर हो गई। इन पंक्तियों के लेखक को लगता है कि पं. लेखराम जी ने स्वामी जी के व्यक्तित्व व उनकी विद्या के बारे में लोगों से अनेक प्रकार की बातें सुनी होगीं जिससे उन्हें स्वामी जी में उन गुणों की अपेक्षा रही होगी। स्वामी जी के दर्शन और वार्तालाप कर उन्हें उनके बारे में सुनी व समझी पूर्व की सभी बातें सत्य सिद्ध तो हुई ही, अपितु स्वामी जी का श्रेष्ठ व्यवहार देखकर वह उनसे अत्यन्त प्रभावित हुए। ऐसे में थकान का दूर होना स्वाभाविक ही था क्योंकि इस भेंट से उनका मन व हृदय प्रसन्नता से भर गया था। यदि स्वामी दयानन्द उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप न होते तो फिर उन्हें अवश्य ग्लानि व क्षोभ हो सकता था जिससे उनकी यात्रा की थकान समाप्त होने के स्थान पर अधिक हो सकती थी। दूसरी महत्वपूर्ण बात जयपुर के बंगाली सज्जन के ईश्वर के व्यापक होने विषयक प्रश्न से सम्बन्ध रखती है। स्वामी जी ने पंडित लेखराम को उनके सभी प्रश्नों व शंकाओं को प्रस्तुत करने व उनका समाधान करवा लेने को कहा था। जयपुर के बंगाली सज्जन ने जो प्रश्न किया था हमें लगता है कि उसका जो उत्तर महर्षि दयानन्द जी ने दिया वह उस समय के अन्य किसी मताचार्य वा धर्माचार्य से मिलना असम्भव था। इससे पं. लेखराम जी की आशंका दूर हो गई। यदि किसी कारण स्वामी दयानन्द जी उन्हें न मिलते और उनके इस प्रश्न का समाधान न होता तो पं. लेखराम जी का भावी जीवन इस प्रश्न का समाधान न मिलने से वह न होता जो ऋषि से इसका समाधान प्राप्त करने पर निर्मित हुआ। हो सकता है कि वह लम्बे समय तक इस प्रश्न के उत्तर पर विचार करते और समाधान न हो पाता। ऐसी स्थिति में हो सकता था कि ईश्वर के वैदिक स्वरुप पर उनका विश्वास स्थिर न रह पाता। अतः महर्षि दयानन्द के दर्शन कर और अपने प्रश्नों का समाधान पाकर पंडित लेखराम जी की वैदिक धर्म में श्रद्धा व निष्ठा में अपूर्व वृद्धि हुई थी, ऐसा हम अनुमान करते हैं। इस घटना से वैदिक धर्म व देश को बहुत लाभ हुआ।

स्वामी दयानन्द जी द्वारा पंडित लेखराम जी का जीव–ब्रह्म की एकता पर किया गया प्रश्न व उसका समाधान भी महत्वपूर्ण है। ऋषि दयानन्द के अनुसार यजुर्वेद का चालीसवां पूरा अध्याय जीव व ब्रह्म का भेद बताता है। हमें लगता है कि ईश्वर की व्यापकता और जीव–ब्रह्म की एकता विषयक ऋषि दयानन्द जी द्वारा दिए उत्तर स्वामी दयानन्द को वेदों का अपूर्व विद्वान होने सहित ऋषि भी सिद्ध करते हैं। इन प्रश्नों के इस प्रकार के समाधान देने वाला धार्मिक विद्वान व नेता उन दिनों देश में कहीं नहीं थे। पं. लेखराम जी का अगला प्रश्न था कि क्या दूसरे मत के लोगों को शुद्ध करना चाहिये अथवा नहीं? इसका निर्णायक दो टूक उत्तर देकर महर्षि दयानन्द ने देश हित का ऐसा कार्य किया जिससे हमारा देश, वैदिक धर्म और संस्कृति बची हुई है। हम सभी जानते हैं कि वैदिक धर्म का अशुद्ध व विकारयुक्त स्वरुप सनातन पौराणिक मत इस प्रश्न पर हमेशा नकारात्मक और देशहित के विपरीत बातें करता रहा। महाभारत काल के बाद स्वामी दयानन्द ऐसे पहले वैदिक धर्मी विद्वान हुए जिन्होंने शुद्धि का न केवल पूर्ण समर्थन किया अपितु देहरादून में एक मुस्लिम बन्धु मोहम्मद उमर को उसके परिवार सहित उसकी इच्छा से वैदिक धर्मी बनाया था। महाभारत के बाद इतिहास की यह अपूर्व घटना है। हम समझते हैं कि इस प्रश्न की महत्ता व इसके ऋषि दयानन्द के शास्त्र–सम्मत उत्तर के कारण भी पंडित लेखराम जी की ऋषि दयानन्द से यह भेंट ऐतिहासिक महत्व की थी। पं. लेखराम जी ने एक प्रश्न विद्युत की उत्पत्ति व अस्तित्व पर किया जिसका ऋषि दयानन्द द्वारा दिया गया उत्तर उनकी गम्भीर वैज्ञानिक सोच को प्रस्तुत करता है। ऋषि दयानन्द जी ने जो उत्तर दिया है वह उनके समय के किसी अन्य धार्मिक प्रवृत्ति के विद्वान से मिलना सम्भव नही दीखता। स्वामी जी के समय के सभी धार्मिक विद्वान मूर्तिपूजा और धार्मिक अन्धविश्वासों से ग्रस्त थे। उनकी विद्या व विज्ञान की उन्नति में कोई रुचि नहीं थी, अतः उनसे ऐसा उत्तर नहीं मिल सकता था।

पंडित लेखराम जी ने ईसाई मत से प्रभावित एक हिन्दू युवक की चर्चा कर बताया है कि वह ऋषि दयानन्द के समाधानों से सन्तुष्ट होकर वैदिक धर्मी हो गया था। देहरादून में भी ऐसी ही घटना घटी थी और परिणाम भी इस घटना के अनुसार ही हुआ था। इससे हम अनुमान करते है कि ऋषि दयानन्द के वैदिक धर्म के प्रचार से अनेक लोग विधर्मी होने से बचे जिससे धर्म व संस्कृति की रक्षा हुई है। अन्य मतों के अनेक लोगों द्वारा भी वैदिक मत अपनाया गया जिससे वैदिक धर्म की महत्ता सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द और पंडित लेखराम जी की इस भेंट से ज्ञात होता है कि धर्म के गहन–गम्भीर ज्ञान सहित ऋषि की विज्ञान के विषयों में भी अच्छी गति थी। लगता है कि इस स्वामी जी से भेंट की घटना से पंडित लेखराम जी के वैदिक धर्म व इसके सिद्धान्तों पर विश्वास में और अधिक वृद्धि हुई होगी जिसका परिणाम उनके बाद के जीवन को देखकर अनुमान किया जा सकता है। पंडित जी ने वैदिक धर्म के प्रचार के साथ अनेक लोगों को धर्मान्तरित होने से बचाया जिसका अनुकूल प्रभाव भविष्य के धर्मान्तरणों पर भी पड़ा। उन्होंने महर्षि दयानन्द का एक विशाल एवं खोजपूर्ण जीवन चरित देकर स्वयं को अमर कर दिया है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त भी आपने विपुल साहित्य का निर्माण किया है। पंडित लेखराम ऋषि दयानन्द के मिशन, वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार, के पहले शहीद कहे जा सकते हैं। यदि उनका जीवन लग्बा होता तो वह वैदिक धर्म की और अधिक सेवा करते। उनका आदर्श जीवन युगों युगों तक लोगों को देश और धर्म पर अपना सर्वस्व अर्पित करने की प्रेरणा देता रहेगा। इति। पं. लेखराम जी का बलिदान 6 मार्च सन् 1897 को लाहौर मे हुआ था। उनको उनके बलिदान दिवस पर सादर श्रद्धांजलि।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

जहां नहीं होता कभी विश्राम आर्य युवक परिषद है उसका नाम

(पृष्ठ 1 का शेष)

को सुस्थिति संपादन व शुद्व किया जाता है। फिर गायत्री मंत्र द्वारा ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना और उपासना की जाती हैं। अंत में ईश्वर को नमस्कार किया जाता हैं। यह पूर्णत वैज्ञानिक विधि हैं जिससे व्यक्ति धार्मिक और सदाचारी बनता हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करता हैं। आर्य नेता अरुण आर्य (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर) ने कहा कि महर्षि दयानंद ने वैदिक संध्या प्रातः और सांय दो बार करने का प्रावधान बताया है। दो बार क्यूंकि प्रातः की गई संध्या से प्रातरू से सांय तक परमेश्वर का स्मरण करते हुए उत्तम आचरण करने की प्रेरणा मिलती हैं और सांय करी गई संध्या से सांय से प्रातः तक परमेश्वर का स्मरण करते हुए उत्तम आचरण करने की प्रेरणा मिलती हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रान्त के संचालक रामकुमार सिंह आर्य ने कहा कि ईश्वर की स्तुति करने का उद्देश्य ईश्वर के समान न्यायकारी, दयालु, सत्यवादी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला बनना हैं। वैदिक संध्या का शुद्व उच्चारण हम सभी को आना चाहिए । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि वैदिक संध्या पूर्णत वैज्ञानिक और प्राचीन काल से चली आ रही हैं। यह ऋषि –मुनियों के अनुभव पर आधारित हैं। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि वैदिक संध्या में सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर की उपासना बताया गया है। गायिका प्रवीना ठक्कर(मुंबई),बिन्दु मदान,रविन्द्र गुप्ता,कुसुम भण्डारी,ईश्वर देवी आर्या, सुलोचना देवी,किरण सहगल, प्रेमा हंस (ऑस्ट्रेलिया),विजय लक्ष्मी,आशा आर्या,सुषमा बजाज आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आचार्य महेन्द्र भाई,आनन्द प्रकाश आर्य,डॉ रचना चावला,दुर्गेश आर्य,अरुण आर्य, महेन्द्र प्रताप नागपाल, विजय हंस, सुषमा गोग्लानी, उर्मिला आर्या,इन्दु मेहता आदि उपस्थित थे।

हिन्दू धर्म रक्षक, पं. लेखराम के 124 वें बलिदान दिवस पर दी श्रद्धांजली

शुद्धि आंदोलन की भेंट चढ़ गये पं. लेखराम –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार,6 मार्च 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अमर शहीद, रक्त साक्षी पंडित लेखराम के 124 वें बलिदान दिवस पर ऑनलाइन श्रद्धांजलि अर्पित की गई।उल्लेखनीय है कि पण्डित लेखराम ने घर वापिसी अभियान को गति प्रदान की ओर जो हिन्दू भाई बहन किसी कारण से मुस्लिम या ईसाई बन गए थे उन्हें शुद्ध करके पुनः वैदिक धर्म की दीक्षा दी।उन्होंने वेद विरोधी मुस्लिम विद्वानों को शास्त्रार्थ की चुनौतियां दी वही उनकी हत्या व बलिदान का कारण बनीं। 6 मार्च,1897 को एक मुस्लिम युवक ने पं. लेखराम के लाहौर स्थित निवास पर सायं 7 बजे पहुंच कर छुरे को उनके पेट में घोप कर हत्या कर दी और हिन्दू धर्म की बलिवेदी पर वो शहीद हो गए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि पं. लेखराम ने महर्षि दयानन्द की वैदिक मान्यताओं, सिद्धान्तों व उद्देश्यों के प्रचार को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया था और अपनी योग्यता व पुरुषार्थ से वैदिक धर्म की महत्वपूर्ण सेवा व रक्षा की,उन्होंने अपने आगे पीछे कपड़े पर आर्य समाज के नियम लिखकर टांग रखे थे । सम्पूर्ण आर्य जगत् व सभी वैदिक धर्मी उनकी सेवाओं एवं बलिदान के लिए सदा–सदा के लिए ऋणी व कृतज्ञ हैं।उनके बलिदान ने यह सिद्ध कर दिया कि वैदिक धर्म के विरोधियों के पास वेद और आर्यसमाज के सिद्धान्तों की काट व उनका उत्तर नहीं है।आज फिर से प.लेखराम जैसे वीरो की आवश्यकता है जो शास्त्रार्थ से वेद विरुद्ध बातों का युक्ति युक्त उत्तर दे सके और विधर्मी हुए लोगों को शुद्ध करके वापिस हिन्दू धर्म में दीक्षा दे सके। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री महेंद्र भाई ने कहा कि महर्षि दयानंद जी की शिक्षाओं को जन जन तक पहुचाने का कार्य प.लेखराम ने किया उनका बलिदान सदियों तक हिन्दू धर्म की रक्षा का संदेश देता रहेगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि धर्मवीर पण्डित लेखराम ने अपनी नश्वर देह का त्याग करते हुए आर्यो को यह सन्देश दिया था, ''तकरीर व तहरीर से प्रचार का कार्य बन्द न हो।'' आज आर्यों को उनकी इस वसीयत को पूरा करना है,तभी भविष्य में वेदाज्ञा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' चरितार्थ हो सकता है। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने इस अवसर पर आजाद हिन्द फौज में रानी झांसी रेजिमेंट की सिपाही रही महान देशभक्त,साहसी एवं स्वाभिमानी महिला कैप्टन नीरा आर्या की जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।उन्हें भारत की ष्पहली महिला जासूसष के रूप में भी जाना जाता है। इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,हरिओम शास्त्री,धर्मपाल आर्य,देवेन्द्र भगत,राम कुमार सिंह,आनन्द प्रकाश आर्य,डॉ रचना चावला,विजय हंस,दीप्ती सपरा,सुदेश आर्या,विभा भारद्वाज,किरण सहगल,संध्या पांडेय आदि उपस्थित थे।

दयानन्द दशमी व अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस सम्पन्न

नारी जाति के उद्धारक थे महर्षि दयानंद –डॉ. सुषमा आर्या
वरिष्ठ राजनेताओं द्वारा पाखंड फैलाना चिंता का विषय –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 8 मार्च 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस व आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद जी के 197 वा जन्मदिन ष्दयानन्द दशमीष के रूप में ऑनलाइन जूम पर मनाया गया । यह कॅरोना काल मे परिषद का 185 वा वेबिनार था। वैदिक विदुषी डॉ. सुषमा आर्या ने कहा कि महर्षि दयानंद जी के नारी जाति पर असंख्य उपकार हैं, उन्होंने समाज सुधार, नारी शिक्षा व वेदों को पढ़ने पढ़ाने पर बल दिया । बाल विवाह को निषेध किया व सती प्रथा को भी अनुचित ठहराया । उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया । स्वामी जी का मानना था कि नर नारी सब एक समान है सबको यज्ञ करने का समान अधिकार है । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद ने समाज में फैली कुरूतियों, रुढ़ियों ,पाखंड का पुरजोर विरोध किया, लेकिन आज के वरिष्ठ राजनेता मूर्ति पूजा, मूक जानवरों का पशु वध आदि कार्य करके या अपनी उपस्थिति देकर पाखंड अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहे हैं जो चिंता का विषय है क्योंकि आम जनता उनका अनुसरण करती हैं । उन्होंने कहा कि आर्य समाज ने महिलाओं की शिक्षा व सुसंस्कृत करने के लिए अनेको गुरुकुल व विद्यालय, महाविद्यालय स्थापित किये और उन्हें स्वालम्बी व स्वाभिमानी बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। आर्य युवती परिषद की प्रदेश अध्यक्षा आर्य नेत्री उर्मिला आर्य ने कहा कि नारी अब अबला नहीं सबला है और हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है । कार्यक्रम अध्यक्ष बहिन मंजू श्री (प्रभारी,पतञ्जलि महिला योग समिति तेलंगाना) ने अपनी बेटियों को बहादुर, स्वालम्बी, शिक्षित करने का आह्वान किया, उन्हें ऐसा मजबूत बनाये जिससे वह जिंदगी के रणक्षेत्र में अपने भाग्य निर्माता स्वयं बन सके । गाजियाबाद से प्रवीन आर्य, नोएडा से मर्दुल अग्रवाल, हापुड़ से पुष्पा आर्या, हिसार से ईश आर्य, सुदेश आर्या,आशा आर्य,प्रेम हंस (ऑस्ट्रेलिया), ईश्वर देवी, सुषमा बुद्धिराजा, प्रगति आर्या, विजया रानी शर्मा ,कुसुम भंडारी, प्रतिभा कटारिया आदि ने भी अपने विचार रखे।

कोरोना वैक्सीन के स्वागत में गीत संगीत उत्सव

कॅरोना वर्ष का समापन खुशी का आगमन –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार, 2 मार्च 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में कॅरोना के एक वर्ष समापन पर वे कोरोना वैक्सीन के स्वागत में गीत संगीत उत्सव का आयोजन ऑनलाइन जूम पर किया गया। यह परिषद का कॅरोना काल में 182 वां वेबिनार था। उल्लेखनीय है कि गत 1 अप्रैल से लगातार ऑनलाइन कार्यक्रम विभिन्न विषयों पर परिषद देती आ रही है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि कोरोना काल का अंत व कोरोना वैक्सीन के आने पर ष्गीत संगीतष के खुशी उत्सव से उसका स्वागत किया गया । गत पूरा वर्ष कोरोना महामारी के भय के साय में बीता अब कोरोना वैक्सीन के आने से लोगों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी है। अब हम सभी को शीघ्र ही हम सभी इस विकट परिस्थिति से निकल कर सामान्य जीवन जीने और कोरोना काल से हुए तनाव व नुकसान को दूर करने में जुट जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि 22 मार्च को लॉकडौन को एक वर्ष हो जाएगा जो एक नया अनुभव था। इस पूरे वर्ष में कई नई तकनीकों और आपदा को अवसर में बदलने के तरीकों को सीखने का अवसर मिला है कॅरोना कई अनुभव नयी सीख भी दे गया है । मुख्य अतिथि शिक्षा विद आशा आर्या (फरीदाबाद) ने कहा कि गीत संगीत कोरोना काल मे हुए तनाव को समाप्त करने में सहायक है। इस प्रकार के आयोजन जीवन मे ऊर्जा और नवपथ की ओर अग्रसित करते है। कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेत्री नीलम आर्या (आर्य समाज शामली) ने कहा कि वैक्सीन लगने के बाद भी हम सभी को सख्ती से नियमो का पालन करने की आवश्यकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि कोरोना वैक्सीन टीकाकरण का दूसरा चरण प्रारम्भ हो चुका है सभी से निवेदन है कि जब भी आपका नंबर आये परिवार के सभी लोगों का टीकाकरण अवश्य करवाएं। गायिका दीप्ति सपरा,किरण सहगल,प्रवीना ठक्कर,बिन्दु मदान,आदर्श मेहता,सुषमा गोग्लानी,जनक अरोड़ा,रविन्द्र गुप्ता,नरेश खन्ना,कुसुम भण्डारी,संध्या पांडेय,प्रतिभा सपरा,अंजू बजाज आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आचार्य महेन्द्र भाई,सौरभ गुप्ता,आनन्द प्रकाश आर्य,आनन्द सूरी,डॉ रचना चावला,सुरेश आर्य ,धर्म पाल आर्य आदि उपस्थित थे।

अष्टांग योग पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

अष्टांग योग जीवन को संवारता और समृद्ध बनाता है –योगाचार्य सौरभ गुप्ता

योग का एक–एक अंग जीवन का निर्माण करता है –अनिल आर्य (सम्पादक, गुड़गांव टूडे)

वीरवार, 4 मार्च 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अष्टांग योग पर आर्य गोष्ठी का आयोजन जूम पर ऑनलाइन किया गया। यह कॅरोना काल में परिषद का 183 वां वेबिनार था। केंद्रीय आर्य युवक परिषद के प्रधान शिक्षक योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आज हमारे बीच कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो गए हैं, जो शरीर और मन को पूरी तरह से जकड़ चुके है,आज भौतिक युग में प्रत्येक मानव दैहिक, दैविक और भौतिक दुखों से घिरा हुआ है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए प्राचीन काल में ऋषियों ने योग विद्या का ज्ञान हम सभी को दिया, जो आज पूरे मनुष्य–जाति को लाभ पहुंचा रही हैं और इसी योग विद्या में अष्टांग योग का उद्देश्य जीवन को संवारना और समृद्ध करना है। अष्टांग योग का अभ्यास सम्पूर्ण विश्व को सदाचारी बनने की अहम संजीवनी बूटी है। उन्होंने कहा कि मनुष्य यदि अष्टांग योग के किसी एक भी अंग को पालन कर ले तो जीवन आनंदमयी हो सकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि सांसारिक कार्यों की सफलता, उचित तथा नियमित दिनचर्या पर निर्भर है एवं प्रेत्यक योगभूमि का सेवन करने के लिए यम और नियम का आचरण करना अत्यावश्यक हैं।योगदर्शन और शास्त्रों में इनका विवरण किया भी है। हमे योगदर्शन में वर्णित अष्टांग योग को जीवन मे अपनाने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम अध्यक्ष गुड़गांव टूडे के संपादक अनिल आर्य ने कहा कि सनातन संस्कृति वह संस्कृति है जिसमें मनुष्य के परिमार्जन के लिए अष्टांग योग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि जैसे दिव्य नियम दिए गये हैं। हमें अपनी संस्कृति का पालन कर अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए और प्रतिदिन योग करने का संकल्प लेना चाहिए । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि अष्टांग योग के विभिन्न अंगों का अभ्यास योग साधक को साधना करने लिए आवश्यक होता है। इससे शरीर , मन की अशुद्धियाँ दूर होती हैं और क्रमशः अभ्यास से आध्यात्मिक उपलब्धियों की प्राप्ति होने लगती है। गायिका दीप्ति सपरा,प्रवीना ठक्कर,बिन्दु मदान,रविन्द्र गुप्ता,कुसुम भण्डारी,संध्या पांडेय,सुदेश आर्या,सविता आर्या,ईश्वर देवी आर्या,विभा शर्मा,विजय हंस आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आचार्य महेन्द्र भाई,प्रेम सचदेवा, राजेश मेंहदीरत्ता,धर्मपाल आर्य,राम कुमार सिंह,आनन्द प्रकाश आर्य,डॉ रचना चावला,व्यायामाचार्य सूर्यदेव आर्य,योगाचार्य मनोज आर्य,अरुण आर्य,मनीषा आर्या,प्रगति,शिवम मिश्रा,पिन्टू आर्य आदि उपस्थित थे।

ईश्वर भक्ति पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

प्रार्थना और पुरुषार्थ ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक –दर्शनाचार्या विमलेश बंसल

ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण ही आनंद का स्रोत –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

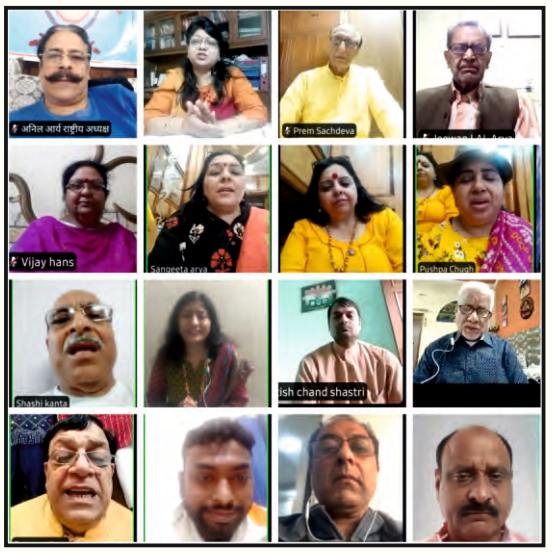

शनिवार, 27 फरवरी 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद व आर्य समाज अशोक विहार, पेज–1, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में ईश्वर भक्ति विषय पर गोष्ठी का आयोजन जूम पर ऑनलाइन किया गया। वैदिक विदुषी दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने प्रेरक ज्ञानवर्धक उदबोधन में बताया कि ईश्वर से सम्बन्ध कैसे जोड़ें और साधना में बीच में आने वाले विघ्नों को कैसे हटाया जाये, ऐसे अनेक विशेष उपाय बताए की सच्चे दिल से प्रार्थना व पुरुषार्थ ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक है । स्वरचित भजन जो कि वेद मन्त्र पर आधारित था –यद्गने स्यामहं त्वं–––उन्होने बताया कि इस तरह की प्रार्थना पुरुषार्थ के साथ ईश्वर को पाने की यदि की जाए तो ईश्वर जो कि हमारे सर्वाधिक निकट है पाने में अति शीघ्र सफलता मिल सकती है।इसके लिए आलस्य, प्रमाद स्त्यान अविरति आदि विघ्नों से दूरी करनी ही होगी। कार्यक्रम अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि मनुष्य सांसारिक मोह में फंसा रहता है वह भौतिक सुख–सुविधाओं के लिए हमेशा भटकता रहता है, जबकि उसे शाश्वत सुख सिर्फ ईश्वर की भक्ति से ही मिल सकता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए आर्ष ग्रंथों का अध्ययन व नित्य संध्या उपासना करके ईश्वर से मिलन का प्रयास करना चाहिए यही सच्चा सुख है । जब व्यक्ति ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से साधना करता है तब हर और आनंद की प्राप्ति होती है । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि आत्मा की तृप्ति के लिए मनुष्य को ईश्वर की शरण लेनी चाहिए व ध्यान, योग साधना से ही उसे पाया जा सकता है । विशिष्ट अतिथि आर्य नेता प्रेम सचदेवा ने कहा कि ईश्वर प्राप्ति में अहंकार बाधक है साधक को को मैं का त्याग करना चाहिए। आर्य नेता जीवन लाल आर्य ने कहा कि यज्ञ परोपकार की भावना का संदेश देता स्वयं जलकर औरों की सुगंध, प्रकाश व जीवन में ऊपर उठने की प्रेरणा देता है।

प्रकाशनादि का विवरण फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक व प्रकाशक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
4. सम्पादक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
5. उन व्यक्तियों के नाम, पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों।	:	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी.), दिल्ली

मैं अनिल कुमार आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 31-3-2021 **अनिल कुमार आर्य**, प्रकाशक

आर्य युवा ब्र.दीक्षेन्द संन्यास दीक्षा लेकर बने स्वामी आदित्य वेश जी

शनिवार, 13 मार्च 2021, आज आर्य समाज के इतिहास में एक स्वर्ण पृष्ठ और जुड़ गया जब स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली,रोहतक में आर्य युवा ब्र.दीक्षेन्द आर्य ने अपना जीवन महर्षि दयानंद के मिशन के लिए लिए समर्पित कर दिया और स्वामी आर्य वेश जी से संन्यास दीक्षा लेकर **''स्वामी आदित्य वेश''** बन गए । बड़ा ही सुंदर, भावपूर्ण दृश्य था जब उन्होंने भिक्षा मांगना शुरू किया । हरियाणा के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों से गणमान्य आर्य जन आशीर्वाद देने उपस्थित थे । दिल्ली से केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की टीम महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह आर्य,प्रवीन आर्य(गाजियाबाद),अरुण आर्य आदि प्रमुख रूप से इस समागम के गवाह बने । पुनः केंद्रीय आर्य युवक परिषद की ओर से इस नयी पारी के लिए हार्दिक बधाई व आशीर्वाद

–अनिल आर्य,राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मा. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970